प्रेषक,

सहायक भूवैज्ञानिक,
भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई,
जिला टॉस्क फोर्स कार्यालय,
कैम्प–लदाड़ी, उत्तरकाशी।

सेवा में,

तहसीलदार डुण्डा,
जनपद उत्तरकाशी।

संख्याः जि0–उ0(दैवीय आपदा)–पुनर्वास/2013–14 दिनांकः २१·११· 2013

विषयः **तहसील डुण्डा, जनपद उत्तरकाशी में परिवारों हेतु फैब्रीकेटेड आवासीय भवनों के निर्माण हेतु प्रस्तावित स्थल की टोही भूगर्भीय निरीक्षण आख्या का प्रेषण।**

महोदय,

उपरोक्त विषयक कार्यालय जिलाधिकारी, जनपद उत्तरकाशी द्वारा तहसीलदार डुण्ड़ा/चिन्यालीसौंड/पुरोला को सम्बोधित एवं भूवैज्ञानिक, जिला टॉस्क फोर्स, उत्तरकाशी को पृष्ठांकित कार्यालय पत्र संख्या 1149/तेरह–31 (2012–13) दिनांक 02 नवम्बर 2013 के अनुपालन के क्रम में अधोहस्ताक्षरी द्वारा सम्पन्न किया गया, जिसकी अद्यतन निरीक्षण आख्याऐं अग्रिम कार्यावाही हेतु संलग्न कर प्रेषित की जा रही है।

संलग्नकः यथोपरि।

भवदीय

(दीपेन्द्र सिंह चन्द)
सहायक भूवैज्ञानिक
Mob: 8192802331
Email id: agddn-dgm-uk@nic.in

संख्याः 545/जि0टा0फो0–उ0का0/दै0 आ0–विस्थापन/फै0भ0–भू0नि0/2013–14.तद्दिनांकित।

प्रतिलिपिः निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित–

1–निदेशक, भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उद्योग निदेशालय, उत्तराखण्ड, देहरादून।
✓2–जिलाधिकारी, जनपद उत्तरकाशी।
3–प्रबन्ध निदेशक, उत्तराखण्ड अवस्थापना विकास निगम लि0 (USIDCL) ,313 इण्डस्ट्रियल एरिया पटेल नगर देहरादून।

(दीपेन्द्र सिंह चन्द)
सहायक भूवैज्ञानिक

आख्या संख्याः ५०/ जि0–उ0(दैवीय आपदा)–पुनर्वास/2013–14

ग्राम अस्तल गुनालगांव, तहसील डुण्ड़ा, जनपद उत्तरकाशी में आपदा प्रभावित परिवारों के पुनर्वास हेतु प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवनों के निर्माण हेतु प्रस्तावित स्थलों की टोही भूगर्भीय निरीक्षण *(Reconnaissance)* आख्या।

कार्यालय जिलाधिकारी, जनपद उत्तरकाशी द्वारा तहसीलदार डुण्ड़ा/चिन्यालीसौंड /पुरोला को सम्बोधित एवं भूवैज्ञानिक, जिला टॉस्क फोर्स, उत्तरकाशी को पृष्ठांकित कार्यालय पत्र संख्या 1149/तेरह–31 (2012–13) दिनांक 02 नवम्बर 2013 निदेशक, भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, देहरादून के कार्यालय आदेश सं0 1051/स्था0/का0आ0/2012–13 दिनांक 15 दिसम्बर 2012 तथा 1560/उ0का0–आपदा/नो0अ0–मुख्या0/2011–12 दिनांक 01 अप्रैल 2013 के अनुपालन के क्रम में दिनांक 13 नवम्बर 2013 को ग्राम अस्तल गुनालगांव का स्थलीय भूगर्भीय निरीक्षण श्री मुकेश सिंह बिष्ट, कनिष्ठ अभियन्ता, (मो.नं.–9917223773) उत्तराखण्ड़ राज्य अवस्थापना विकास निगम लि0 के साथ ग्रामवासियों की उपस्थिति में अधोहस्ताक्षरी द्वारा भूगर्भीय निरीक्षण कार्य सम्पन्न किया गया, जिसकी निरीक्षण आख्या निम्नवत हैः–

वर्तमान पहुँच मार्ग, स्थल का विवरण एवं टोपोग्राफिक स्थितिः

प्रश्नगत् भूखण्ड़, धरासू–गंगोत्री मोटर मार्ग *(NH-108)* पर धरासू से 09 किमी0 की दूरी पर देवीधार नामक स्थान पर बाइफरकेट होने वाले देवीधार–अस्तल–रनाड़ी मोटर मार्ग पर लगभग 03 किमी0 की दूरी पर मोटर मार्ग के अपहिल में भागीरथी नदी के बांये फ्लैंक पर ग्राम अस्तल धनारी गुनालगांव के श्री शिवानन्द सारणी क्रमांक (23), पुत्र विशम्भर को ग्राम हिटाणु मध्ये मंजियाणू नामें तोक में खसरा सं0 2989 (रकवा 0.010 है0) निजी नाप भूमि, श्री शशी भूषण सारणी क्रमांक (27) पुत्र मनीराम को ग्राम हिटाणु मध्ये मंजियाणू नामें तोक में खसरा सं0 2990 (रकवा 0.013 है0) निजी नाप भूमि, श्री रमेश चन्द सारणी क्रमांक (28) पुत्र हर्षमणि को हिटाणु मध्ये मंजियाणू नामें तोक में खसरा सं0 489म. (रकवा 0.010 है0) निजी नाप भूमि, श्री विनोद गणेश सारणी क्रमांक (29) पुत्र हर्षमणि को ग्राम हिटाणु मध्ये मंजियाणू नामें तोक में खसरा सं0 489म. (रकवा 0.010 है0) निजी नाप भूमि, श्री अरविन्द–राजेन्द्र प्रसाद सारणी क्रमांक (25) पुत्र मायाराम राजेन्द्र प्रसाद को मंजियाणू नामे तोक में खसरा संख्या 489म. (रकवा 0.010 है0) निजी नाप भूमि, श्री चन्द्रमोहन सारणी क्रमांक (26) पुत्र शिवा को ग्राम हिटाणू मध्ये चौलीतोक में खसरा संख्या 410म. (रकवा 0.010 है0) निजी नाप भूमि व श्री राकेश सारणी क्रमांक (24)पुत्र रविदत्त को ग्राम हिटाणू मध्ये चौलीतोक में खसरा संख्या 410म. (रकवा 0.010 है0) निजी नाप भूमि स्थित एवं प्रस्तावित है। लगभग 3 किमी0 की दूरी पर मार्ग के अपहिल में अवस्थित है।

यह भारतीय सर्वेक्षण विभाग की *1:50,000* पैमाने की टोपोशीट संख्या *53J/6* में पड़ता है। जिसके लगभग मध्य भाग की भौगोलिक स्थिति *30°42'13.37"N 78°21'14.00"E* तथा *msl (mean sea level)* के सापेक्ष कन्टूर लेविल लगभग *1025मी0* है।

भूगर्भीय संरचना एवं भूस्थलाकृतिक स्थितिः

भूगर्भीय दृष्टिकोण से यह भूभाग लघु हिमालय पर्वत श्रंख्ला के जौनसार समूह में वर्गीकृत भूभाग के अन्तर्गत है। इस स्थल एवं इसके सन्निकट में यथावत चटटानें के एक्सपोजर्स सतह पर दृष्टिगोचरित नही होते हैं। भूस्थलाकृतिक दृष्टिकोण से पहाड़ी के इस भूभाग को पूर्व में कृषिकार्य हेतु सोपानयुक्त बनाया गया है। सामान्यतया इस भूभाग का ढ़लान 5^0–10^0 की रेंज में उत्तरवत दिशा की ओर अवलोकित किया गया है। ओवरबर्डन में मुख्यतया फिलाइटस के छोटे से मध्यम आकार के फ्रैगमैन्टस मिश्रित अवस्था में विद्यमान हैं। जल की निरन्तर संतृप्तता *(water saturation)* बने रहने के दशा में मध्यम कठोर से कोमल प्रकृति की इन फिलिटिक चट्टानों में क्षरण की प्रक्रिया तेज होने की सम्भावना है। इन चट्टानों में यथावत चट्टानों के विस्तार से भिन्न अन्य दो सैटस संधियां भी विद्यमान है।

प्रस्तावित भूभाग से उच्च व निम्न कन्टूर लेविलों पर भूस्थलाकृति ढ़लानयुक्त *(sloppy)* है। ढ़लान का परिमाप ऊपर एवं नीचे सामान्यतया 15^0–20^0 रेंज में 250^0 दिशा में अवलोकित किया गया है।

विचारणीय बिन्दुः

चौंली तोक में, श्रीमती कौशल्या देवी के मकान के अपहिल में एक प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवन का निर्माण प्रस्तावित है। प्रश्नगत भूखण्ड़ के निकट उत्तरी भूभाग में पूरव से पश्चिमवत दिशा में वृहद नाला प्रवाहित होता है, जिसके अपस्ट्रीम में नाला अपने बांये फ्लैंक में *meandering* के कारण *convex* भाग में कटान करता है। वर्षाकाल में नाले में जल की मात्रा बढ़ने से उत्पन्न कटाव के बढ़नें के कारण इस भूभाग की उच्च छेद्यता *(high vulnerability)* में वृद्धि होने की प्रबल सम्भावना को दृष्टिगत यह स्थल प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवन निर्माण कार्य हेतु भूगर्भीय दृष्टिकोण से अनुपयुक्त समझा जाता है।

सुझाव एवं शर्तेंः

प्रस्तावित ग्राम अस्तल गुनालगांव में भूमि पर प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवनों के निर्माण स्थल में निम्नलिखित सुरक्षात्मक उपाय अपनाये जाने से भविष्य में भूस्खलन के कारण सम्भावित क्षति से रोकने के उद्देश्य से नितान्त अपरिहार्य होंगेः–

1. प्रस्तावित स्थल पर स्वास्थानें चटटानों *(in-situ rocks)* की प्रकृति एवं संरचना को दृष्टिगत रखते हुए एक व्यवस्थित ड्रेनज सिस्टम, पहाड़ी के स्थायीत्व बनाये रखने हेतु विस्थापित किये जाने वाले परिवारों की सुरक्षा हेतु नितान्त आवश्यक होगा, जिससे ढ़लानदार, मृदा आवरित भूभाग में अवतलन न हो सके। प्रस्तावित स्थल के आगे व पीछे पक्की नालियों का निर्माण किया जाना आवश्यक होगा।

2. वर्षा जल व प्रयुक्त जल की सुरक्षित निकासी हेतु उच्च भाग व ग्राम क्षेत्र के अन्तर्गत पक्की नालियों का निर्माण किया जाय व एकत्रित जल का सुरक्षित निस्तारण गदेरे में किया जाय। उचित प्रकार से रखरखाव व निरन्तर अवरोध रहित जल प्रवाह सुनिश्चित जाना अत्यावश्यक होगा।

3. निर्माणाधीन सोपान एवं उसमें किये जा रहे स्थायीत्व प्रदान किये जाने के कार्य में यथावत चटटानों में धारक दीवार *(Retaining Wall)* की नींव रखे जाने *Inclined weep holes Stepped* जो लगाई जा रही है में रंध्र छिद्र *(weep holes)* जानी आवश्यक होगी व उनके सुचारू कार्य की क्षमता को सुनिश्चित किया जाना नितान्त आवश्यक होगा।

4. निकटवर्ती सम्पूर्ण क्षेत्र में मृदा को संगठित रखने वाले पौधों व झाड़ियों का रोपण किया जाना उचित होगा।

5. प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवनों के पृष्ठ भाग पर धारक दीवार से भवन निर्माण सुरक्षित दूरी छोड़कर किया जाना आवश्यक होगा, एवं अपहिल से सतही व अन्तर्सतही जल के दुष्प्रभाव से सुरक्षित किया जा सके।

6. प्रस्तावित स्थल सक्रिय भूकम्पीय जोन के अन्तर्गत आता है, अतः प्रस्तावित निर्माण भूकम्पीय गुणांको के अनुसार एवं भूकम्परोधी तकनीक पर आधारित ही किया जाना आवश्यक होगा।

7. वर्षा जल एवं प्रीफैब्रीकेट आवास भवनों में प्रयुक्त जल की सुरक्षित निकासी हेतु उच्च भाग एवं ग्राम क्षेत्र के अन्तर्गत पक्की नालियों का निर्माण किया जाय एवं एकत्रित जल का सुरक्षित निस्तारण प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवनों के चयनित निर्माण स्थल क्षेत्र से दूर किया जाय।

8. चूंकि ग्राम अस्तल गुनालगांव के आपदा प्रभावितों हेतु प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवनों के लिये चयनित निकटवर्ती विभिन्न तोकों में प्रश्नगत भूभागों प्रश्नगत भूभाग में वर्तमान में कृषि कार्य हेतु उपयोग में लाये जाने के फलस्वरूप सतह से लगभग 1.8 फीट गहराई में सतह पर सघनता *(compactness)* अवलोकित की गई है। अतः नींव की गहराई के आकलन में इस तथ्य को सम्मिलित कर तद्नुसार यथोचित गहराई तक प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवनों की नींव को स्थायीत्व स्थापित करने एवं अवतलन *(subsidence)* को प्रतिबन्धित करने हेतु रखा जाना नितान्त आवश्यक होगा।

निष्कर्षः–

प्रथमदृष्टया, भूवैज्ञानीय दृष्टिगत प्रस्तावित स्थल पर प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवनों का निर्माण कार्य उपरोक्त सुझावों एवं शर्तों के अनुपालन कराते हुए भूगर्भीय दृष्टिकोण से उपयुक्त समझा जाता है।

दिनांकः 2 नवम्बर, 2013
स्थानः कैम्प लदाड़ी, उत्तरकाशी

(दीपेन्द्र सिंह चन्द)
सहायक भूवैज्ञानिक
Mob: 8192802331
Email id: agddn-dgm-uk@nic.in

आख्या संख्याः 31/ जि0–उ0(दैवीय आपदा)–पुनर्वास/2013–14

श्री गजेन्द्र सिंह पुत्र मालचन्द निवासी ग्राम जुगल्डी तोक पटारा तहसील डुण्ड़ा, जनपद उत्तरकाशी सारणी कमांक (19),में परिवार हेतु प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवन के निर्माण हेतु प्रस्तावित स्थल की टोही भूगर्भीय निरीक्षण *(Reconnaissance)* आख्या।

कार्यालय जिलाधिकारी, जनपद उत्तरकाशी द्वारा तहसीलदार डुण्ड़ा/चिन्यालीसौंड/पुरोला को सम्बोधित एवं भूवैज्ञानिक, जिला टॉस्क फोर्स, उत्तरकाशी को पृष्ठांकित कार्यालय पत्र संख्या 1149/तेरह–31 (2012–13) दिनांक 02 नवम्बर 2013 निदेशक, भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, देहरादून के कार्यालय आदेश सं0 1051/स्था0/का0आ0/2012–13 दिनांक 15 दिसम्बर 2012 तथा 1560/उ0का0–आपदा/नो0अ0–मुख्या0/2011–12 दिनांक 01 अप्रैल 2013 के अनुपालन के क्रम में दिनांक 16 नवम्बर 2013 को ग्राम जुगल्डी में श्री उदय सिंह पंवार, राजस्व उपनिरीक्षक (मो0 नं. 7500315785) तथा श्री मुकेश सिंह बिष्ट,(मो.नं.–9917223773), श्री सुखवीर सिंह चौहान, (मो.नं.–9411199755) एवं श्री नीरज कुमार पाल (मो.नं. –9759352253), कनिष्ठ अभियन्ताओं (सिविल) उत्तराखण्ड़ राज्य अवस्थापना विकास निगम लि0 के दल के साथ ग्रामवासियों की उपस्थिति में अधोहस्ताक्षरी द्वारा स्थलीय भूगर्भीय निरीक्षण सम्पन्न किया गया, जिसकी निरीक्षण आख्या निम्नवत हैः–

प्रस्तावित स्थल राष्ट्रीय राजमार्ग 108 में जनपद मुख्यालय उत्तरकाशी से धरासू की ओर लगभग 10 किमी0 दूरी पर के उपरान्त ग्राम जुगल्डी की ओर जाने वाले कच्चे हल्के वाहन मार्ग (LVR) लगभग 05 किमी0 की दूरी पर स्थिति है। प्रश्नगत पुनर्वास प्रस्तावित भूखण्ड ग्राम जुगल्डी तोक पटारा तहसील डुण्डा के खसरा संख्या 888 रकवा 0.026 है0 निजी नाप भूमि है।

भूगर्भीय दृष्टिकोण से लघु हिमालय पर्वत श्रृंखला के अन्तर्गत वर्गीकृत क्षेत्र में पड़ता है। भूखण्ड के अन्तर्गत मृदा का मोटा आवरण सतह पर विद्यमान है। इस भूभाग को सोपान के रुप में कृषि कार्य हेतु विकसित किया गया है। यह भारतीय सर्वेक्षण विभाग की *1:50,000* पैमाने की टोपोशीट संख्या *53J/6* में पड़ता है। जिसके लगभग मध्य भाग की भौगोलिक स्थिति *30°46'11.5"N 78°21'49" E* तथा *msl (mean sea level)* के सापेक्ष कन्टूर लेविल लगभग *1330मी0* है। जिसके ढलान युक्त भूभाग पर यह भूखण्ड पड़ता है उसका ढलान 05^{0}–10^{0} दक्षिणवत् दिशा की ओर है।

सुझाव एवं शर्तेः

प्रीफैब्रीकेट भवन के स्थायित्व हेतु पृष्ठ भाग के सोपान से प्रीफैब्रीकेटेड भवन का निर्माण यथोचित दूरी छोड़ते हुए अपहिल से प्रवाहित होने वाले सतही/अन्तर्सतही वर्षा जल व भवन में प्रयुक्त जल की सुरक्षित निकासी को सुव्यवस्थित रूप से नियंत्रित किये जाने की व्यवस्था किया जाना नितान्त आवश्यक होगा। प्रश्नगत भूभाग में वर्तमान में कृषि कार्य हेतु उपयोग में लाये जाने के फलस्वरूप सतह से लगभग 1.5 फीट गहराई में सतह पर सघनता *(compactness)* अवलोकित की गई है। अतः नींव की गहराई के आकलन में इस तथ्य को सम्मिलित कर तद्नुसार यथोचित गहराई तक प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवन की नींव को स्थायीत्व स्थापित करने एवं अवतलन *(subsidence)* को प्रतिबन्धित करने हेतु रखा जाना नितान्त आवश्यक होगा।

निष्कर्षः

प्रथम दृष्टया, वर्तमान में, इस भूखण्ड पर उपरोक्त सुझावों एवं शर्तों के अनुपालन के तहत प्री फैब्रीकेटेड प्रकृति के आवासीय भवन का निर्माण किये जाने हेतु भूगर्भीय दृष्टिकोण से उपयुक्त समझा जाता है।

दिनांकः 21 नवम्बर, 2013
स्थानः कैम्प लदाड़ी, उत्तरकाशी

21/11/2013

(दीपेन्द्र सिंह चन्द)
सहायक भूवैज्ञानिक
Mob: 8192802331
Email id: agddn-dqm-uk@nic.in

आख्या संख्याः 31/ जि0–उ0(दैवीय आपदा)–पुनर्वास/2013–14

श्री रोशन लाल पुत्र खेलवारु निवासी ग्राम जुगल्डी तहसील डुण्ड़ा, जनपद उत्तरकाशी सारणी कमांक (20),में परिवार हेतु प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवन के निर्माण हेतु प्रस्तावित स्थल की टोही भूगर्भीय निरीक्षण *(Reconnaissance)* आख्या।

कार्यालय जिलाधिकारी, जनपद उत्तरकाशी द्वारा तहसीलदार डुण्ड़ा/चिन्यालीसौंड /पुरोला को सम्बोधित एवं भूवैज्ञानिक, जिला टॉस्क फोर्स, उत्तरकाशी को पृष्ठांकित कार्यालय पत्र संख्या 1149/तेरह–31 (2012–13) दिनांक 02 नवम्बर 2013 निदेशक, भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, देहरादून के कार्यालय आदेश सं0 1051/स्था0/का0आ0/2012–13 दिनांक 15 दिसम्बर 2012 तथा 01 अप्रैल 2013 के अनुपालन के क्रम में दिनांक 16 नवम्बर 2013 को ग्राम जुगल्डी का स्थलीय भूगर्भीय निरीक्षण श्री उदय सिंह पंवार, राजस्व उपनिरीक्षक (मो0 नं. 7500315785) तथा श्री मुकेश सिंह बिष्ट (मो.नं.–9917223773), श्री सुखवीर सिंह चौहान, (मो.नं.–9411199755) एवं श्री नीरज कुमार पाल (मो.नं.–9759352253), कनिष्ठ अभियन्ताओं (सिविल) उत्तराखण्ड़ राज्य अवस्थापना विकास निगम लि0 के दल के साथ ग्रामवासियों की उपस्थिति में अधोहस्ताक्षरी द्वारा सम्पन्न किया गया, जिसकी निरीक्षण आख्या निम्नवत हैः–

प्रस्तावित स्थल राष्ट्रीय राजमार्ग 108 में जनपद मुख्यालय उत्तरकाशी से धरासू की ओर लगभग 10 किमी0 दूरी पर के उपरान्त ग्राम जुगल्डी की ओर जाने वाले कच्चे हल्के वाहन मार्ग *(LVR)* लगभग 05 किमी0 की दूरी पर स्थिति है। प्रश्नगत पुनर्वास प्रस्तावित भूखण्ड ग्राम जुगल्डी तोक पटारा तहसील डुण्डा के खसरा संख्या 1620 रकवा 0.008 है0 निजी नाप भूमि है।

भूगर्भीय दृष्टिकोण से लघु हिमालय पर्वत श्रृंखला के अन्तर्गत वर्गीकृत क्षेत्र में पड़ता है। भूखण्ड के अन्तर्गत मृदा का मोटा आवरण सतह पर विद्यमान है। इस भूभाग को सोपान के रुप में कृषि कार्य हेतु विकसित किया गया है। यह भारतीय सर्वेक्षण विभाग की *1:50,000* पैमाने की टोपोशीट संख्या *53J/6* में पड़ता है। जिसके लगभग मध्य भाग की भौगोलिक स्थिति *30°46'11.5"N 78°21'49" E* तथा लगभग *1300मी0 msl (mean sea level)* कन्टूर लेविल है। जिसके ढलान युक्त भूभाग पर यह भूखण्ड पड़ता है उसका ढलान *W & SW* दिशा की ओर है। भूखण्ड के पश्चिम में 10 मी0 डाऊन कन्टूर लेबिल पर मोटर मार्ग *(LVR)* गुजरता है तथा मोटर मार्ग एवं इस भूखण्ड के मध्य ढलान तीव्र है एवं असघन फिलिटिक मेटेरियल से निर्मित है। जिस कारण भूखण्ड के स्थायित्व को प्रीफैब्रीकेटेड भवन निर्माण किये जाने के उपरान्त उसकी छेद्यता ***(Vulnerability)*** में वृद्धि होने की प्रबल सम्भावना है।

अतः भूगर्भीय दृष्टिकोण एवं वर्तमान परिस्थितियों देखते हुए यह प्रस्तवित स्थल भवन निर्माण कार्य हेतु निरस्त किया जाता है।

दिनांकः 20 नवम्बर, 2013
स्थानः कैम्प लदाड़ी, उत्तरकाशी

(दीपेन्द्र सिंह चन्दे) 21/11/2013
सहायक भूवैज्ञानिक
Mob: 8192802331
Email id: agddn-dgm-uk@nic.in

आख्या संख्याः 33/ जि0–उ0(दैवीय आपदा)–पुनर्वास/2013–14

श्री रोशन लाल पुत्र खेलवारु निवासी ग्राम जुगल्डी तहसील डुण्ड़ा, जनपद उत्तरकाशी सारणी क्रमांक (20) में परिवार हेतु प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवन के निर्माण हेतु प्रस्तावित स्थल की टोही भूगर्भीय निरीक्षण *(Reconnaissance)* आख्या।

कार्यालय जिलाधिकारी, जनपद उत्तरकाशी द्वारां तहसीलदार डुण्ड़ा/चिन्यालीसौंड/पुरोला को सम्बोधित एवं भूवैज्ञानिक, जिला टॉस्क फोर्स, उत्तरकाशी को पृष्ठांकित कार्यालय पत्र संख्या 1149/तेरह–31 (2012–13) दिनांक 02 नवम्बर 2013 निदेशक, भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, देहरादून के कार्यालय आदेश सं0 1051/स्था0/का0आ0/2012–13 दिनांक 15 दिसम्बर 2012 तथा 1560/उ0का0–आपदा/नो0अ0–मुख्या0/2011–12 दिनांक 01 अप्रैल 2013 के अनुपालन के क्रम में दिनांक 16 नवम्बर 2013 को ग्राम जुगल्डी का स्थलीय भूगर्भीय निरीक्षण श्री उदय सिंह पंवार, राजस्व उपनिरीक्षक (मो0 नं. 7500315785) तथा श्री मुकेश सिंह बिष्ट, (मो.नं.–9917223773), श्री सुखवीर सिंह चौहान, (मो.नं.–9411199755), एवं श्री नीरज कुमार पाल (मो.नं.–9759352253), कनिष्ठ अभियन्ताओं (सिविल) उत्तराखण्ड़ राज्य अवस्थापना विकास निगम लि0 के दल के साथ ग्रामवासियों की उपस्थिति में अधोहस्ताक्षरी द्वारा सम्पन्न किया गया, जिसकी निरीक्षण आख्या निम्नवत हैः–

प्रस्तावित स्थल राष्ट्रीय राजमार्ग 108 में जनपद मुख्यालय उत्तरकाशी से धरासू की ओर लगभग 10 किमी0 दूरी पर के उपरान्त ग्राम जुगल्डी की ओर जाने वाले कच्चे हल्के वाहन मार्ग (LVR) लगभग 05 किमी0 की दूरी पर स्थिति है। प्रस्तावित भूखण्ड निरस्त किये गये भूखण्ड के SE में लगभग 15 मी0–20 मी0 की दूरी पर स्थित है। प्रश्नगत पुनर्वास प्रस्तावित भूखण्ड ग्राम जुगल्डी तोक पटारा तहसील डुण्डा के खसरा संख्या 1636 एवं उससे सटे पूर्वी अपहिल के सोपान के अन्तर्गत ल0 8.20मी0 एवं चौ0 7.50मी0 निजी नाप भूमि है।

भूगर्भीय दृष्टिकोण से लघु हिमालय पर्वत श्रृंखला के अन्तर्गत वर्गीकृत क्षेत्र में पड़ता है। भूखण्ड के अन्तर्गत मृदा का मोटा आवरण सतह पर विद्यमान है। इस भूभाग को सोपान के रुप में कृषि कार्य हेतु विकसित किया गया है। यह भारतीय सर्वेक्षण विभाग की *1:50,000* पैमाने की टोपोशीट संख्या *53J/6* में पड़ता है। जिसके लगभग मध्य भाग की भौगोलिक स्थिति *30°46'5 .1"N 78°21'53.2" E* तथा *msl (mean sea level)* के सापेक्ष कन्टूर लेविल लगभग *1360मी0* है। जिसके ढलान युक्त भूभाग पर यह भूखण्ड पड़ता है उसका ढलान *SW* दिशा की ओर है। जिसके ढलान युक्त भूभाग पर यह भूखण्ड पड़ता है उसका ढलान 05^{0}–10^{0} दक्षिणवत् दिशा की ओर है।

प्रीफैब्रीकेट भवन के स्थायित्व हेतु पृष्ठ भाग के सोपान से प्रीफैब्रीकेटेड भवन का निर्माण यथोचित दूरी छोड़ते हुए अपहिल से प्रवाहित होने वाले सतही/अन्तर्सतही जल को सुव्यवस्थित रूप से नियंत्रित किये जाने की व्यवस्था नितान्त आवश्यक होगा। प्रश्नगत भूभाग में वर्तमान में कृषि कार्य हेतु उपयोग में लाया जा रहा है, अतः सतह पर लगभग 1.5 फीट गहराई में निरन्तर कृषि कार्य में उपयोग के कारण सतह पर सघनता *(compactness)* में कमी आना स्वभाविक है। अतः नींव की गहराई के आकलन में इस तथ्य को सम्मिलित कर तद्नुसार यथोचित गहराई तक प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवन की नींव को स्थायीत्व–स्थिरता स्थापित रखने एवं अवतलन *(subsidence)* को प्रतिबन्धित करने हेतु रखा जाना नितान्त आवश्यक होगा।

प्रथम दृष्टया, इस भूखण्ड पर उपरोक्त सुझावों एवं शर्तों के अनुपालन के तहत प्री फैब्रीकेटेड प्रकृति के आवासीय भवन का निर्माण किये जाने हेतु भूगर्भीय दृष्टिकोण से उपयुक्त समझा जाता है।

दिनांकः 21 नवम्बर, 2013
स्थानः कैम्प लदाड़ी, उत्तरकाशी

(दीपेन्द्र सिंह चन्दे)
सहायक भूवैज्ञानिक
Mob: 8192802331
Email id: agddn-dgm-uk@nic.in

आख्या संख्याः 34/ जि0–उ0(दैवीय आपदा)–पुनर्वास/2013–14

श्री राय सिंह पुत्र बचन सिंह निवासी ग्राम चिंणाखोली पट्टी बरशाली, तहसील डुण्ड़ा, जनपद उत्तरकाशी में परिवार हेतु प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवन के निर्माण हेतु प्रस्तावित स्थल की टोही भूगर्भीय निरीक्षण *(Reconnaissance)* आख्या।

कार्यालय जिलाधिकारी, जनपद उत्तरकाशी द्वारा तहसीलदार डुण्ड़ा/चिन्यालीसौंड/पुरोला को सम्बोधित एवं भूवैज्ञानिक, जिला टॉस्क फोर्स, उत्तरकाशी को पृष्ठांकित कार्यालय पत्र संख्या 1149/तेरह–31 (2012–13) दिनांक 02 नवम्बर 2013 निदेशक, भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, देहरादून के कार्यालय आदेश सं0 1051/स्था0/का0आ0/2012–13 दिनांक 15 दिसम्बर 2012 तथा 01 अप्रैल 2013 के अनुपालन के क्रम में दिनांक 16 नवम्बर 2013 को ग्राम जुगल्डी का स्थलीय भूगर्भीय निरीक्षण श्री उदय सिंह पंवार, राजस्व उपनिरीक्षक (मो0 नं. 7500315785) तथा श्री मुकेश सिंह बिष्ट,(मो.नं.–9917223773), श्री सुखवीर सिंह चौहान, (मो.नं.–9411199755), एवं श्री नीरज कुमार पाल (मो.नं.–9759352253), कनिष्ठ अभियन्ताओं (सिविल) उत्तराखण्ड़ राज्य अवस्थापना विकास निगम लि0 के दल के साथ ग्रामवासियों की उपस्थिति में अधोहस्ताक्षरी द्वारा सम्पन्न किया गया, जिसकी निरीक्षण आख्या निम्नवत है:–

प्रस्तावित पुनर्वास प्रस्तावित भूखण्ड राष्ट्रीय राजमार्ग–108 में जनपद मुख्यालय उत्तरकाशी से धरासू की ओर लगभग 10 किमी0 दूरी के उपरान्त ग्राम चिंणाखोली पट्टी बरशाली की ओर जाने वाले हल्के वाहन मार्ग (LVR) लगभग 02 किमी0 की दूरी पर स्थिति है। जिसका खसरा संख्या 7551 रकवा 0.043 है0 निजी नाप भूमि है, जो भूगर्भीय दृष्टिकोण से लघु हिमालय पर्वत श्रृंखला के अन्तर्गत वर्गीकृत क्षेत्र में पड़ता है।

भूगर्भीय दृष्टिकोण से लघु हिमालय पर्वत श्रृंखला के अन्तर्गत वर्गीकृत क्षेत्र में पड़ता है। भूखण्ड के अन्तर्गत मृदा का मोटा आवरण तथा उसके साथ फिलिटिक एवं क्वार्टजिटिक चट्टानो के फ्रगमेन्ट्स मिश्रित अवस्था में ढलान युक्त भूभाग पर विद्यमान है। इस भूभाग को पहाड़ी के ढलान को काटकर सोपान के रुप में विकसित किया गया है। प्रश्नगत भूखण्ड के अपहिल की अपेक्षाकृत ड़ाऊनहिल में पहाड़ी का ढलान पूरबवत् की दिशा तीव्र है। यह भारतीय सर्वेक्षण विभाग की *1:50,000* पैमाने की टोपोशीट संख्या *53J/6* में पड़ता है।

भूखण्ड के अपहिल में ओवर बर्डन अपेक्षाकृत 01 मी0 मोटाई से कम है जिसपर वृक्ष विद्यमान हैं। डाऊन कन्टूर लेबिल पर मोटर मार्ग *(LVR)* गुजरता है तथा मोटर मार्ग एवं इस भूखण्ड के मध्य ढलान तीव्र है एवं असघन ***(uncompact)*** अधिकतम फिलिटिक मैटेरियल से निर्मित है। जिस कारण भूखण्ड के स्थायित्व को प्रीफैब्रीकेटेड भवन निर्माण किये जाने के उपरान्त उसकी छेद्यता ***(Vulnerability)*** में वृद्धि होने की प्रबल सम्भावना है।

अतः प्रथम दृष्टया भूगर्भीय भूस्थलाकृति दृष्टिकोण एवं वर्तमान परिस्थितियों देखते हुए यह प्रस्तावित स्थल भवन निर्माण कार्य हेतु अनुपयुक्त है।

दिनांकः 21 नवम्बर, 2013
स्थानः कैम्प लदाड़ी, उत्तरकाशी

(दीपेन्द्र सिंह चन्द)
सहायक भूवैज्ञानिक
Mob: 8192802331
Email id: agddn-dgm-uk@nic.in

आख्या संख्याः 35/जि0–उ0(दैवीय आपदा)–पुनर्वास/2013–14

श्री मोहन लाल पुत्र भगत लाल निवासी ग्राम गेंवला बरशाली तहसील डुण्ड़ा, जनपद उत्तरकाशी सारणी क्रमांक (21) में परिवार हेतु प्रीफैब्रीकेट आवासीय भवन के निर्माण हेतु प्रस्तावित स्थल की टोही भूगर्भीय निरीक्षण *(Reconnaissance)* आख्या।

कार्यालय जिलाधिकारी, जनपद उत्तरकाशी द्वारा तहसीलदार डुण्ड़ा/चिन्यालीसौंड /पुरोला को सम्बोधित एवं भूवैज्ञानिक, जिला टॉस्क फोर्स, उत्तरकाशी को पृष्ठांकित कार्यालय पत्र संख्या 1149/तेरह–31 (2012–13) दिनांक 02 नवम्बर 2013 निदेशक, भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, देहरादून के कार्यालय आदेश सं0 1051/स्था0/का0आ0/2012–13 दिनांक 15 दिसम्बर 2012 तथा 01 अप्रैल 2013 के अनुपालन के क्रम में दिनांक 16 नवम्बर 2013 को ग्राम जुगल्डी का स्थलीय भूगर्भीय निरीक्षण श्री उदय सिंह पंवार, राजस्व उपनिरीक्षक (मो0 नं. 7500315785) तथा श्री मुकेश सिंह बिष्ट,(मो.नं.–9917223773), श्री सुखवीर सिंह चौहान, (मो.नं.–9411199755), एवं श्री नीरज कुमार पाल (मो.नं.–9759352253), कनिष्ठ अभियन्ताओं (सिविल) उत्तराखण्ड़ राज्य अवस्थापना विकास निगम लि0 के दल के साथ ग्रामवासियों की उपस्थिति में अधोहस्ताक्षरी द्वारा सम्पन्न किया गया, जिसकी निरीक्षण आख्या निम्नवत हैः–

प्रस्तावित स्थल राष्ट्रीय राजमार्ग–108 में जनपद मुख्यालय उत्तरकाशी से धरासू की ओर लगभग 10 किमी0 दूरी पर के उपरान्त ग्राम जुगल्डी की ओर जाने वाले कच्चे हल्के वाहन मार्ग *(LVR)* लगभग 05 किमी0 की दूरी पर स्थिति है।प्रश्नगत पुनर्वास प्रस्तावित भूखण्ड ग्राम गेवला बरशाली तहसील डुण्डा के खसरा संख्या 118 रकवा 0.048 है0 निजी नाप भूमि है।

भूगर्भीय दृष्टिकोण से लघु हिमालय पर्वत श्रृंखला के अन्तर्गत वर्गीकृत क्षेत्र में पड़ता है। भूखण्ड के अन्तर्गत मृदा का मोटा आवरण सतह पर विद्यमान है। इस भूभाग को सोपान के रुप में कृषि कार्य हेतु विकसित किया गया है। यह भारतीय सर्वेक्षण विभाग की *1:50,000* पैमाने की टोपोशीट संख्या *53J/6* में पड़ता है। जिसके पहाड़ी का ढलान 05^0–10^0 W दिशा की ओर है। प्रश्नगत् भूखण्ड के पूरब में ग्राम गेंवला के मध्य में गुजरने वाला पैदल मार्ग स्थित है, जिसके ठीक लगभग 03मी0 नीचे यह भूखण्ड़ सटा हुआ है। इसके निकटवर्ती सोपानों में पूर्व निर्मित पारम्परिक भवन स्थिर अवस्था में हैं ।

प्रस्तावित भूखण्ड पर प्री फैब्रीकेटेड प्रकृति का आवासीय भवन का निर्माण किये जाने हेतु स्थल भूगर्भीय दृष्टिकोण से उपयुक्त है।

दिनांकः २१ नवम्बर, 2013
स्थानः कैम्प लदाड़ी, उत्तरकाशी

(दीपेन्द्र सिंह चन्द)
सहायक भूवैज्ञानिक
Mob: 8192802331
Email id: agddn-dgm-uk@nic.in